पाठ का नाम - मेरी कल्पना का आदर्श समाज
लेखक का नाम - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(i) फिर मेरी दृष्टि से आदर्श समाज क्या है? ठीक है, यदि ऐसा पूछेंगे, तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वंछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

प्रश्न (क) लेखक ने किन-विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना है और क्यों?

उत्तर - लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो। उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

प्रश्न(ख) भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'भ्रातृता' का अर्थ है - भाईचारा। लेखक ऐसा भाईचारा चाहता है जिसमें बाधा न हो। सभी सामूहिक हित होने से एक-दूसरे के हितों को समझें तथा एक-दूसरे की रक्षा करे।

प्रश्न(ग) लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप भाईचारा है। यह दूध- पानी के मिश्रण की तरह होता है। इसमें उदारता होती है।

(ङ) जाति प्रथा के पोषक जीवन, शारीरिक - सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार

एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति-प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों की अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्रश्न(क) लेखक के अनुसार जाति-प्रथा के समर्थन किन अधिकारों को देने के लिए राजी हो सकते हैं और किन्हें नहीं?

उत्तर- लेखक के अनुसार, जाति-प्रथा के समर्थक जीवन, शारीरिक सुरक्षा व संपत्ति के अधिकार को देने के लिए राजी हो सकते हैं, किंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली उपयोग की स्वतंत्रता देने के लिए तैयार नहीं हैं।

प्रश्न(ख) 'दासता' के दो लक्षण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'दासता' के दो लक्षण हैं- पहला लक्षण कानूनी है। दूसरा लक्षण वह है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित अधिकार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश किया जाता है।

प्रश्न(ग) व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न दिए जाने पर लेखक ने क्या संभावना व्यक्त की है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न दिए जाने पर लेखक यह संभावना व्यक्त करता है कि समाज उन लोगों को दासता में जकड़कर रखना चाहता है।